

[This question paper contains 3 printed pages.] Roll No.:

Sr. No. of Question Paper:

Unique Paper Code : 2133102006

Name of the Paper : **Sample Paper: Art of Balanced Living (DSE)**

Name of Course : B.A. (Programme) with Sanskrit, NEP UGCF

Semester : VI

- Duration : 3 Hours Maximum Marks: 90 Write your Roll No. at the top of the answer sheet.
उत्तर-पत्र के ऊपर अपना अनुक्रमांक लिखें।
- Attempt all questions.
सभी प्रश्नों के उत्तर दें।
- Answers must be written in either Sanskrit, Hindi, or English. Use only one language throughout.
उत्तर संस्कृत, हिन्दी या अंग्रेजी में लिखें, लेकिन पूरे प्रश्नपत्र में एक ही भाषा का प्रयोग करें।

1. Long Answer Questions / दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Answer any three of the following (12×3=36):

निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए (12×3=36):

1. बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर श्रवण, मनन और निदिध्यासन के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
Describe the nature of the notions of Sravana, Manana and Nididhyasana on the basis of Brihadaranyaka Upanishad.
 2. योगदर्शन में प्रतिपादित योग के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए चित्तवृत्तिनिरोध के उपायों का वर्णन कीजिए।
Explaining the nature of yoga as described in the Yoga philosophy, elucidate the methods of Cittavṛttinirodha.
 3. पातञ्जलयोगदर्शन में वर्णित अष्टांग-योग का वर्णन कीजिए।
Describe the Ashtanga Yoga as mentioned in the Yoga philosophy of Patanjali.
 4. क्रियायोग का अर्थ स्पष्ट करते हुए चित्तप्रसादन के उपायों का वर्णन कीजिए।
Explaining the meaning of 'Kriya-Yoga', describe the methods of Chittaprasadana.
 5. गीता के आधार पर संतुलित जीवन के लिए 'भक्ति-योग' की महत्ता का वर्णन कीजिए।
Describe the importance of 'Bhakti-Yoga' for a balanced living on the basis of the Gita.
-

2. Explanation of Verses/Concepts / श्लोक अथवा अवधारणाओं की व्याख्या

Explain any five of the following, choosing either (a) or (b) in each (5×5=25):

निम्नलिखित में से प्रत्येक के (क) या (ख) में से कोई एक चुनकर, किन्हीं पाँच की व्याख्या कीजिए (5×5=25):

a.

- "य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् । उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ।।"
ya enam veti hantāraṁ yaś cainaṁ manyate hatam, ubhau tau na vijānīto nāyaṁ hanti na hanyate.
OR अथवा
- "कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते । पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ।।"
kārya-karaṇa-kartṛtve hetuḥ prakṛtir ucyate, puruṣaḥ sukha-duḥkhānāṁ bhokṛtve hetur ucyate.

b.

- "प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम् । उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ।।"
praśānta-manasaṁ hy enaṁ yoginaṁ sukham uttamam, upaiti śānta-rajasaṁ brahma-bhūtam akalmaṣam.
OR अथवा
- "आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन । सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ।।"
ātmaupamyena sarvatra samaṁ paśyati yo 'rjuna, sukhaṁ vā yadi vā duḥkhaṁ sa yogī paramo mataḥ.

c.

- "समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः । ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम् ।।"
samo 'haṁ sarva-bhūteṣu na me dveṣyo 'sti na priyaḥ, ye bhajanti tu mām bhaktyā mayi te teṣu cāpy aham.
OR अथवा
- "अनन्यश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।"
ananyaś cintayanto mām ye janāḥ paryupāsate, teṣāṁ nityābhiyuktānāṁ yoga-kṣemaṁ vahāmy aham.

d.

- "ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ।।"
ye tu sarvāṇi karmāṇi mayi sannasya mat-parāḥ, anyenaiva yogena mām dhyāyanta upāsate.
OR अथवा
- "अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ।।"
athaitad apy aśakto 'si kartuṁ mad-yogam āśritaḥ, sarva-karma-phala-tyāgaṁ tataḥ kuru yatātma-vān.

e.

- "नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ।।"
niyataṁ kuru karma tvaṁ karma jyāyo hy akarmaṇaḥ, śarīra-yātrāpi ca te na prasiddhyed akarmaṇaḥ.
OR अथवा
 - "यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः । स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।"
yad yad ācarati śreṣṭhas tat tad evetaro janaḥ, sa yat pramāṇaṁ kurute lokas tad anuvartate.
-

3. Short Explanations / संक्षिप्त व्याख्या

Explain any two of the following (3.5×2=7):

निम्नलिखित में से किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए (3.5×2=7):

a. शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान — ये पाँच नियम ।

The five niyamas as per Patanjali's Yoga Sutra.

b. दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम् ।

The concept of vairāgya (dispassion) and its role in yoga.

c. तत्र स्थितौ यत्नोऽभ्यासः ।

The importance of abhyāsa (practice) in attaining steadiness of mind.

4. Sanskrit Note / संस्कृत टिप्पणी

Write a note in Sanskrit on any one of the following (7):

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में टिप्पणी लिखिए (7):

i. यम (Yama)

ii. अहिंसा (Ahimsa)

iii. ज्ञानयोग (Jnana Yoga)